

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग

लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या-211
उत्तर देने की तारीख-04/08/2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव

†*211. डॉ. हेमंत विष्णु सवरा:
श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़:

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के प्रभाव का कोई स्वतंत्र, क्षेत्र-वार मूल्यांकन कराया है/कराने का विचार है;
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;
- (घ) क्या सरकार ने महाराष्ट्र के पालघर और जम्मू और कश्मीर संघ राज्यक्षेत्र जैसे ग्रामीण (गांवों) और जनजातीय बहुल क्षेत्रों में एनईपी के प्रभाव का आकलन किया है; और
- (ङ.) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
शिक्षा मंत्री
(श्री धर्मेन्द्र प्रधान)

(क) से (ङ.): विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है।

माननीय संसद सदस्यों डॉ. हेमंत विष्णु सवरा और श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़ द्वारा दिनांक 04.08.2025 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का प्रभाव के संबंध में पूछे गए लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या 211 के भाग (क) से (ड) के उत्तर में उल्लिखित विवरण

(क)से (ड): राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) की घोषणा के बाद, विभिन्न हितधारकों द्वारा कई प्रभावशाली सुधार और पहल की गई हैं तथा पिछले पाँच वर्षों में कार्यान्वयन के दौरान, एनईपी 2020 का प्रभाव स्कूल शिक्षा और उच्चतर शिक्षा के नीतिगत गलियारों तथा कक्षाओं दिखाई दे रहा है। एनईपी 2020 के पाँच वर्ष पूरे होने पर, भारत में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया है। एनईपी ने छात्रों को नम्यता, बुनियादी साक्षरता और भविष्य की तैयारी के साथ सशक्त बनाया है, जो वैश्विक ज्ञान महाशक्ति के रूप में भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य चरण (क्रमशः कक्षा 3, 6 और 9) के अंत में छात्रों में क्षमता के विकास में आधारभूत प्रदर्शन को समझने के लिए दिनांक 04.12.2024 को महाराष्ट्र और जम्मू और कश्मीर सहित पूरे भारत में "परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024" आयोजित किया गया था। देश भर में सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के 781 जिलों के 74,000 से अधिक स्कूलों के 21.15 लाख से अधिक छात्रों और 2.70 लाख शिक्षकों ने इस सर्वेक्षण में भाग लिया। सर्वेक्षण 2024 में, कुल मिलाकर 63% भाग लेने वाले छात्र ग्रामीण क्षेत्रों से थे, जिससे बड़े पैमाने पर मूल्यांकन में ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों का मजबूत और समावेशी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुआ। परख सर्वेक्षण में महाराष्ट्र शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्यों में से एक के रूप में उभरा है, जहाँ कक्षा 3, 6 और 9 में 1,23,000 से अधिक छात्रों का मूल्यांकन किया गया, जबकि जम्मू और कश्मीर में इन कक्षाओं में 44,000 से अधिक छात्रों का मूल्यांकन किया गया। परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण 2024 के लिए राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तरीय रिपोर्ट कार्ड <https://dashboard.parakh.ncert.gov.in/en> पर उपलब्ध हैं।

यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस (यूडाइज+) के अनुसार, वर्ष 2014-15 और वर्ष 2023-24 के बीच, भारत की स्कूल शिक्षा प्रणाली में प्रमुख शैक्षिक संकेतकों में परिमेय सुधार देखा गया है। इसमें लगभग 14.72 लाख स्कूलों और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बुनियादी से लेकर माध्यमिक स्तर के लगभग 24.8 करोड़ छात्रों का डेटा शामिल है। शिक्षकों की संख्या 85.6 लाख से बढ़कर 98.07 लाख हो गई, जबकि महिला शिक्षकों की संख्या 40.2 लाख से बढ़कर 52.3 लाख हो गई, जो एक अधिक लैंगिक-संतुलित कार्यबल को दर्शाता है। छात्र-शिक्षक अनुपात (पीटीआर) में सभी स्तरों पर सुधार हुआ है — जिसमें प्राथमिक स्तर पर 30 से 21 और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर 38 से 24, जिससे कक्षा में ध्यान और अधिगम की स्थिति में सुधार हुआ है। प्राथमिक स्तर पर स्कूल छोड़ने की दर घटकर 1.9%, उच्च प्राथमिक स्तर पर 5.2% और माध्यमिक स्तर पर 14.1% रह गई है, जो बेहतर छात्र प्रतिधारण का संकेत है। स्कूल शिक्षा के औसत वर्ष 6.28 से बढ़कर 7.33 वर्ष और अपेक्षित स्कूल शिक्षा के वर्ष 11.75 से बढ़कर 13.36 वर्ष हो गए हैं, जबकि युवा साक्षरता दर 94.6% से बढ़कर 97% हो गई, जो बुनियादी शिक्षा और पहुँच पर एनईपी 2020 सुधारों के प्रभाव को दर्शाता है।

महाराष्ट्र में, वर्ष 2014-15 में 7.25 लाख शिक्षकों की तुलना में वर्ष 2023-24 में 7.38 लाख शिक्षकों के साथ स्कूलों में कुल 2.14 करोड़ छात्र नामांकित हैं, जिसमें लड़कियों की संख्या 1.47 करोड़ है, जो कुल नामांकन का 49.6% है। अनुसूचित जाति (एससी) के छात्र 32.1 लाख (12.5%), जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) के छात्र 27.8 लाख (कुल का 11.2%) हैं।

पालघर जिले में, वर्ष 2014-15 और वर्ष 2023-24 के बीच, कंप्यूटर वाले स्कूलों का प्रतिशत 45% से बढ़कर 75.6% हो गया, और इंटरनेट की पहुँच 11% से बढ़कर 50.6% हो गई। पीने के पानी और हाथ धोने संबंधी सुविधा जैसी बुनियादी सुविधाएँ अब लगभग 100% स्कूलों में उपलब्ध हैं, जबकि पुस्तकालयों तक पहुँच 99% से ऊपर बनी हुई है। सुगम्यता में भी सुधार हुआ है, 90% स्कूलों में रैंप और 80% से ज्यादा स्कूलों में रेलिंग हैं, जो एक दशक पहले शून्य थी—जो समावेशी, तकनीक-सक्षम शिक्षा के प्रति पालघर की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इसी प्रकार, यूडीआईएसई 2023-24 के आंकड़ों के अनुसार, जम्मू और कश्मीर में कुल 26.3 लाख छात्र नामांकित हुए थे, जिनको 1.67 लाख शिक्षक पढ़ा रहे हैं, जबकि वर्ष 2014-15 में यह संख्या 1.64 लाख थी। लड़कियों की संख्या 49.3% है, जो लगभग 12.97 लाख है। राज्य में आदिवासी छात्रों की संख्या 14% (लगभग 3.68 लाख) और अनुसूचित जाति के छात्रों की संख्या 8.2% (लगभग 2.16 लाख) है। प्राथमिक शिक्षा के लिए सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 113% है, जो मजबूत भागीदारी को दर्शाता है, और स्कूल छोड़ने की दर में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई है।

उच्चतर शिक्षा में, वार्षिक वेब आधारित 'अखिल भारतीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण (एआईएसएचई)' उच्चतर शिक्षा पर एक व्यापक डेटा स्रोत है। एआईएसएचई 2022-23 के अनुसार, वर्ष 2014-15 से उच्चतर शिक्षा के नामांकन में 30% की वृद्धि हुई है, जो 4.46 करोड़ तक पहुँच गया है। वर्ष 2014-15 में 46.06 लाख की तुलना में वर्ष 2022-23 में अनुसूचित जाति के छात्रों का नामांकन 69.13 लाख है, जो 50.1% की वृद्धि दर्शाता है। अनुसूचित जनजाति के छात्रों का नामांकन वर्ष 2014-15 में 16.41 लाख से बढ़कर वर्ष 2022-23 में 28.72 लाख हो गया है, जो 75% की वृद्धि दर्शाता है। कुल एसटीईएम नामांकन 99.76 लाख है।

महाराष्ट्र में वर्ष 2022-23 में 48.59 लाख छात्रों का नामांकन हुआ, जबकि वर्ष 2014-15 में यह संख्या 37.36 लाख थी, जो 30.1% की वृद्धि दर्शाता है। छात्राओं का नामांकन 22.07 लाख को पार कर गया है, जिसमें राज्य का जीईआर 36.3 राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है। अ.जा. के नामांकन की संख्या 46.9% बढ़कर 6.22 लाख हो गई, जबकि अ.ज.जा. का नामांकन 49.3% बढ़कर 2.32 लाख हो गया है। संघ राज्य क्षेत्र जम्मू और कश्मीर में वर्ष 2022-23 में 3.96 लाख नामांकन हुए, जबकि वर्ष 2014-15 में यह संख्या 3.38 लाख थी, जो 18.5% की वृद्धि दर्शाता है। छात्राओं का नामांकन 2.05 लाख को पार कर गया है। अ.जा. के नामांकन की संख्या 48.7% बढ़कर 26,820 हो गई जबकि अ.ज.जा. के नामांकन की संख्या 96.9% बढ़कर 28,962 हो गई।

उच्चतर शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों के परिणामस्वरूप अधिक से अधिक उच्चतर शिक्षा संस्थानों को अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग में स्थान मिल रहा है। क्यूएस 2026 में, 54 भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थानों/विश्वविद्यालयों को स्थान दिया गया है, जबकि क्यूएस 2014 में यह संख्या 11 थी। क्यूएस 2026 में, शीर्ष 500 में 10 भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थान हैं। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग, एशिया 2025 में भारत का दूसरा सबसे अधिक प्रतिनिधित्व है, जिसमें 163 विश्वविद्यालय हैं और 7 संस्थान शीर्ष 100 में शामिल हैं। वर्ष 2025 की क्यूएस विषय रैंकिंग में 79 भारतीय उच्चतर शिक्षा संस्थान शामिल थे, जो पिछले वर्ष के 69 से 10 अधिक है, जो 14% की वृद्धि दर्शाता है। भारतीय संस्थानों का प्रतिनिधित्व 533 प्रविष्टियों में किया गया, जो पिछले संस्करण में 424 प्रविष्टियों से 25.7% अधिक है।

भारत ने बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाई है जिसमें वर्ष 2023-24 में वर्ष 2014-15 से 115% से अधिक की वृद्धि के साथ वर्ष 2023-24 में 92,168 पेटेंट आवेदन दायर किए गए। इस वृद्धि का एक प्रमुख चालक शैक्षणिक संस्थानों का योगदान रहा है। घरेलू शिक्षण संस्थानों द्वारा पेटेंट फाइलिंग वर्ष 2021-22 में 7405 से तीन गुना बढ़कर वर्ष 2023-24 में 23,306 हो गई है। भारत में नवाचार को बढ़ावा देने में शैक्षणिक संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वर्ष 2023-24 में, उन्होंने 23,306 पेटेंट आवेदन दायर किए, जो उस वर्ष दायर सभी पेटेंट का 25.28% है। यह अनुसंधान और नए विचारों में उनके मजबूत और बढ़ते योगदान को दर्शाता है। डब्ल्यूआईपीओ आईपी सांख्यिकी डेटा सेंटर के अनुसार भारत वर्ष 2023 में कुल पेटेंट आवेदनों (निवासी + विदेश) की संख्या में छठे स्थान पर रहा है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के 'अनुसंधान एवं विकास सांख्यिकी पर एक नज़र 2022-23' के अनुसार, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग (एस एंड ई) में प्रदान की गई पीएचडी की संख्या के मामले में भारत तीसरे स्थान पर है। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रीय विज्ञान फाउंडेशन (एनएसएफ) डेटाबेस के अनुसार, विज्ञान एवं इंजीनियरिंग प्रकाशनों की कुल संख्या के मामले में भी भारत (2010 में सातवें स्थान से) वर्ष 2022 में तीसरे स्थान पर रहा।

अनुसंधान और नवाचार पर एनईपी के फोकस ने वैश्विक नवाचार सूचकांक (जीआईआई) में भारत की रैंकिंग को वर्ष 2015 में 81 से बढ़ाकर वर्ष 2020 में 48 कर दिया है और वर्तमान में 2024 में यह 39वें स्थान पर है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारतीय उच्चतर शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्राष्ट्रीयकरण के निरंतर प्रयासों ने प्रतिष्ठित विदेशी विश्वविद्यालयों को भारतीय शिक्षा परिदृश्य में प्रवेश करने में सक्षम बनाया है। भारत में विदेशी परिसर स्थापित करने के लिए यूके, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका और इटली जैसे देशों के विश्व स्तर के 11 विश्वविद्यालयों को आशय पत्र जारी किए गए हैं। विशेष रूप से, साउथेम्प्टन विश्वविद्यालय ने चालू शैक्षणिक वर्ष में गुरुग्राम में अपने परिसर का संचालन पहले ही कर लिया है। दो ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालयों- डीकिन विश्वविद्यालय और वोल्लोंगोंग विश्वविद्यालय- ने

गुजरात के गिफ्ट सिटी में परिचालन शुरू कर दिया है। इसके अतिरिक्त, यूके स्थित क्वीन्स यूनिवर्सिटी बेलफास्ट और कोवेंट्री विश्वविद्यालय को भी गिफ्ट सिटी में परिसर स्थापित करने की मंजूरी मिल गई है। आईआईटी मद्रास (जांजीबार) और आईआईटी दिल्ली (आबू धाबी) जैसे भारतीय संस्थान वैश्विक स्तर पर विस्तार कर रहे हैं। आईआईएमए और यूनाइटेड अरब एमिरेट (यूएई) सरकार ने दुबई अंतर्राष्ट्रीय अकादमिक सिटी (डीआईएसी) में आईआईएमए दुबई परिसर की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

एनईपी 2020 का उद्देश्य भारत की परंपराओं और स्थानीय संदर्भों से जुड़े रहते हुए अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा स्तरों को पूरा करना है। यह शिक्षा को और अधिक समावेशी, समग्र और भविष्य के लिए तैयार करने के उद्देश्य से सुव्यवस्थित सुधारों की एक श्रृंखला के साथ, भारत की शिक्षा प्रणाली में एक आमूल-चूल परिवर्तन की भी परिकल्पना करता है। एनईपी 2020 इसके कार्यान्वयन के लिए विभिन्न समय-सीमाओं के साथ-साथ सिद्धांतों और कार्यप्रणाली का भी प्रावधान करती है। इसमें यह भी प्रावधान है कि वर्ष 2030-40 के दशक में, पूरी नीति क्रियाशील अवस्था में होगी, जिसके बाद इसकी एक और व्यापक समीक्षा की जाएगी।
